National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-04-2020; Accepted: 15-04-2020; Published: 30-04-2020
www.nationaljournals.com
Volume 5, Issue 2, 2020, Page No. 43-45

शैल्पिक वैशिष्ट्य के धरातल पर नयी कविता

सुनीता मिश्रा
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, गामदेवी, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
आधुनिक हिंदी कविता भारतेंदु युग से चलकर द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद जैसे कई पड़ावों को पार करती हुई नई कविता के धरातल पर पहुंची। इन सभी युगों में कविता अलग दृष्टि व संवेदना से जुड़ी है,अर्थात हर युग की अपनी– अपनी काव्य दृष्टि रही है। नई कविता सतत विकास की एक रूपरेखा भी स्पष्ट करती है। परिवर्तन की परंपरा के इतिहास में नई कविता की अपनी एक अलग पहचान है,उसका अपना एक महत्व है।

नई कविता ने परंपरा से रस तो ग्रहण किया किंतु उसकी अनुगामी या पुजारी नहीं बनी, अपितु प्रबुद्ध चेतना द्वारा युग की पीठिका पर प्रयोग करके आगे बढ़ने व जीवन मूल्य प्राप्त करने में विश्वास रखती अपना स्वयं का दृष्टिबोध लेकर नितांत संवेदनशील, बौद्धिकता,समसामयिकता, आधुनिक बोध, परिवेशगत यथार्थ और लेखक के अनुभूति से अटूट रिश्ता रखती नई कविता आधुनिक हिंदी काव्य धारा में अपनी एक अलग व विशिष्ट पहचान बनाने में समर्थ रही है। नई कविता व्यष्टि से होते हुए समष्टि तक विभिन्न संवेदनात्मक बिंदुओं को अत्यंत सूक्ष्म रूप से छूते हुए पहुंचती है। नई कविता हिंदी साहित्य के आधुनिक समय में रचे गए काव्य में संवेदना, शिल्प और वैचारिक धरातल पर एक ऐसी उपलब्धि है जिसे नकारा नहीं जा सकता ।

1950–51 के बाद जिस नई कविता का सृजन हुआ वह आधुनिक दृष्टिकोण की उदारता को और भावबोध की व्यापकता को लेकर आई। इसका भवबोध किसी भी प्रकार की रूढ़ि से कुंठित नहीं है। इसीलिए यह आशा–निराशा, निर्माण–विध्वंस, सुंदर–असुंदर,आस्था–अनास्ता आदि सभी भावों, संवेदनाओं को लेकर चलती है। यह मनुष्य के देवत्व से नहीं अपितु उसके मनुष्यत्व से परिचित कराती है। वह बताती है कि 'हर आदमी में देवता है और हर देवतापन हमको नपुंसक बनता है।'
(जो बंधनहीं सका, गरजा कुमार माथुर)
"नई कविता के विषय में डॉक्टर राजकुमार का कथन है मैं यह बौद्धिक चिंता ना वैज्ञानिक विश्लेषण सतत विकासशील दृष्टि प्रयोगशीलता रकात्मक तटस्थता आदि से संपन्न एक संस्कार परवाह है एक दिशा प्रक्रिया है मूल्य या तथ्य नहीं बल्कि एक भाव धार हैदृ।"
(नई कविता में मिथक, डॉ राजकुमार)
शैल्पिक दृष्टि से भी नई कविता प्रयोगधर्मी नई दृष्टि के साथ आई । उसने शैल्पिक धरातल पर युगानुरूप क्रांतिकारी परिवर्तन करके शिल्प के कई नए प्रतिमान स्थापित किए। भाषा,शब्द, प्रतीक, बिम्ब, उपमान– योजना, छंद, काव्य रूप आदि सभी धरातलों पर भिन्नता को लेकर नवीन शिल्प,नवीन विधान के साथ आगे बढ़ी। इसकी भाषा रश्मि तानों–बानों से नहीं अपितु यथार्थ के मोटे खुरदुरे धागों से बुनी गई है। वह सामान्य बोलचाल के निकट होकर भी कलात्मक और बिंबात्मक है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसके शब्द, प्रतीक,उपमान,बिम्ब आदि विविध क्षेत्रों से लिए गए हैं जो नवीन अर्थवत्ता से युक्त सर्वथा नवीन है।छंद विधान की दृष्टि से नई कविता परंपरा से अलग हटकर मुक्त भूमि पर खड़ी है।

इस तरह नई कविता तर्क, बुद्धि, ज्ञान, वैज्ञानिकता व विवेक की नई भूमि पर नए भाव व दृष्टिबोध के साथ खड़ी हुई और उसने हिंदी कविता में अपनी एक अलग पहचान बनाई। साथ ही साथ नई कविता ने लोकजीवन के बिंबो, प्रतीकों ,शब्दों और उपमानों को लोकजीवन के ही बीच से चुनकर अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण तथा सजीव बनाया। वह अपनी अन्तर्लय बिंबात्मकता, नवीन प्रतीक–योजना,नवीन विशेषणों के प्रयोग, नवीन उपमानों से ओत–प्रोत होकर आधुनिक हिंदी कविता के जगत में कदम रखती है और मजबूती से अपने पैर जमाकर अपने महत्व को कायम करती है।

मूल शब्दः संवेदनात्मकता, बिम्बात्मक, अन्तर्लय, प्रयोगधर्मी, उपादान, प्रयोगशीलता, स्वछंद, वैज्ञानिकता, बौद्धिकता, नवीनता आदि।

1954 ईस्वी में 'नई कविता' नामक पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी काव्य जगत में नई कविता की प्रतिष्ठा हुई, जिसने नवलेखन अर्थात नए साहित्य को रचा तथा नई काव्य प्रवृत्तियों का गंभीर विवेचन किया । विजयदेव नारायण साही और अज्ञेय के संपादन में निकली इस पत्रिका ने हिंदी काव्य जगत में नवीनता बोध की लहर– सी उठा दी। वैसे तो नई कविता के सभी कवि समीक्षकों ने यह बात स्वीकार की है कि प्रयोगवाद के तत्वाधान में कई नए प्रयोग काव्य में हुए इनमें से कुछ सफल प्रयोगों के आधार पर नई कविता की नींव पड़ी है और यह भी माना कि श्तीसरे सप्तकश के प्रकाशन के साथ नई कविता सर्व स्वीकृत हो गई । काव्य और शिल्प के सामंजस्य पर जोर देती नई कविता ने काव्य जगत में अपनी एक अलग विशिष्ट पहचान बनाई है। नई कविता की सारी भूमिकाएं और मान्यताएं नई हैं।

साहित्य और शिल्प का गहरा सम्बन्ध है तथा उसका अपना एक महत्व है,क्योंकि सिर्फ शिल्प ही वह माध्यम है जो रचनाकार के भावों को न केवल सजीव व साकार है करता अपितु आकर्षक व प्रभावशाली भी बनाता है। यदि एक शिल्पी अपने उपादानों से पत्थर में भी प्राण फूंक सकता है तो एक रचनाकार अपने तूलिका से अपने विचारों को सजीव–साकार कर सकता है। उसके उपादान उसकी भाषा और अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यम हैं। लेखक रूपी शिल्पी इन्हीं अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों से अपनी रचना को सँवारता है, सजाता है । नई कविता के कवि ने परम्परा की बंधी–बंधाई लीक को तोडी और अपने अन्तर्लय को नवीन प्रतीकों, बिम्ब– योजनाओं,नये विशेषणों व उपमानों के माध्यम से नवीनता के साथ प्रस्तुत किया है।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा के बिना साहित्य तो क्या सम्पूर्ण समाज गूंगा है। समाज की भाषा यदि बोलचाल व सम्पर्क स्थापित करने का कार्य करती है तो साहित्य सार्थक शब्दों की ललित कला है। काव्य की भाषा किसी एक पद्धति में बंधकर नहीं चलती। पहले कविता की भाषा छंदों, पदों काव्य – शास्त्रीय नियमो की गुलाम थी,परिणामतः कवि अपने मनोभावों को सहजता, सरलता व स्वतंत्रता से व्यक्त करने में कुछ हद तक मुश्किलों से जूझता था, उसके लिए भावों को अभिव्यक्त करना इतना आसान नहीं था जितना कि नई कविता के कवि लिए आसान था क्योंकि नई कविता के कवि ने सारे बन्धनों को तोड़कर जनभाषा अर्थात बोलचाल की भाषा को काव्य–भाषा के रूप में स्वतंत्रता व स्वछंदता की उड़ान दी। इस प्रकार नई कविता का नवीनता की प्रयोग– शीलता का पहला आयाम भाषा है। इन कवियों की भाषा सम्बन्धी प्रयोगशीलता ने कई वादों (छायावाद, प्रगतिवाद,प्रयोगवाद आदि) की सीमा तोड़ी। इनकी कविता में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द व छंद का निर्माता कवि स्वयं है। इनकी भाषा के शब्द में बसनेवाला देवता कोई और नहीं लघु व सामान्य मानव है,जिसने उसका अर्थ निश्चित किया है तभी तो श्रमिकों की मानसिक स्थिति और कार्य करते समय उनके मुँह से उच्चरित निरर्थक शब्दों को भी सार्थक रूप में समाहित किया है। संस्कृत के साथ–साथ समाज में आसानी से प्रचलन में आनेवाले हिंदी, अंग्रेजी, देशज तथा उर्दू के शब्दों को अपने ढंग से सहेजकर नई कविता ने समाज की भाषा–बोली को नवजीवन दिया है। जैसे रू–

"बड़े शहर के ढंग और हैं,
हम गोटे हैं यहाँ,
दाँव गहरे हैं उस चौपड़ केदृ। [1] (अज्ञेय)
अथवा
"अपना ठाठ फकीरी
मंगनी के सुख–साज सेदृ।"[2]

(अरी ओ करुणा प्रभामय, अज्ञेय)

इसी तरह अपने मन की भड़ास निकालते हुए धूमिल 'संसद से सड़के तक' में कहते हैं–
"मैं खुद को कुरेद रहा हूँ
जमी हुई काई और उगी हुई घास को
खरोच रहा था, नोच रहा था ।"[3]

(पटकथा)

अथवा
"चिमनियों की गंध में डूबा हुआ शहर
शाम थककर आ रही है, कारखानों मेंदृ।"[4]

(श्रीकांत वर्मा)

भाषा में कई नए शब्द जैसे टोये, सीटी, भभके, ठसकना, ठूँस, फुंगियाना, विरस, सिराया, चिड़चिड़ी, ठिठुरन आदि गढ़कर उनका धड़ल्ले से प्रयोग करके भाषा को एक खुलापन व ताजगी देने का प्रयास नई कविता में किया है, साथ ही लोक भाषा के तत्व भी समाहित किए गए हैं।
नया कवि नई संवेदना की अभिव्यक्ति करने के लिए पुरानी भाषा में अपने आप को असमर्थ पाता है। इसीलिए वह भाषा के नए शब्द रूप गढ़ने के लिए तत्पर रहता है। नई कविता भाषा के क्षेत्र में भी आधुनिक बोध के साथ बढ़ती है और नई होती है व चीजों के आर–पार दो अर्थ मिलाकर सिर्फ एक स्वच्छंद अर्थ देती है। नई भाषा में गद्यात्मकता के प्रति विशेष लगाव रहा है। अलंकृत भाषा के बनावटी पन से दूर सपाट शब्दों में सपाट बयानी से जुड़कर कहीं–कहीं इन कवियों की भाषा खुरदरी हो गई है। जैसे –

"श्रद्धा सम्मान और प्रेरणा जैसे शब्दों को,
पान की पीक के साथ उठता हूं मैं,
मंत्रीमंडलों में बलात्कार करने वाले लोगों ,
पर मेरे थूक का रंग लाल है,
काश, मेरे खून का रंग भी लाल होता ।" [5]

(मणि मधुकर) अभिधा शैली में अभिव्यक्ति का दंभ भरने वाले इन कवियों की भाषा में कहीं ना कहीं संस्कार हीनता भी दिखाई देती है। अशोक बाजपयी के शब्दों मेंदृ "रचनात्मक स्तर पर भाषा संस्कार के प्रति, उसकी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति,उदासीनता आई है और पारंपरिक अनुगूंजों व असंगों से कवियों के अज्ञान का तथा आरुचि के कारण कट जाने से काव्य भाषा में सपाटता,सतहीपन और मानवीय दरिद्रता आ गई है।"
शब्द की दृष्टि से नई कविता का शब्द भंडार बहुत व्यापक है। संस्कृत,उर्दू, तथा प्रांतीय बोलियों के शब्दों के साथ–साथ अंग्रेजी के शब्दों का सामान्य रूप से प्रयोग हुआ है।

"हम ईश्वर हैं ऑटोमेटिक
पोर–पोर में घुस अदृश्य हो
स्थूल जगत चालित करते हैं ।"[6]
या
"बड़े–बड़े आदर्श वाक्यों को
स्वर्णाक्षरों में लिखवाकर
अपने ड्राइंगरूम में सजा दो ।"[7]

('नयी कविता', उमाकांत मालवीय) इसके साथ ही आम आदमी के चिर–परिचित शब्दों के प्रयोग के साथ विज्ञान, धर्म, दर्शन,राजनीति व समाजशास्त्र आदि सभी क्षेत्रों से शब्द चयन का प्रयास नई कविता के कवियों ने किया है। नए कवियों ने भाषा के साथ खिलवाड़ करते हुए उसे अपनी सुविधानुसार तोड़ने–मरोड़ने की कोशिश भी की है। जैसे :–

"एकाएक मुझे भान होता है, जग का,
अखबारी दुनिया का फैलाव,
फँसाव, घिराव, तनाव है, सब ओर
पत्ते ना खड़के
सेना ने घेर ली है सड़कें ।" [8]
('अंधेरे में', गजानन माधव मुक्तिबोध)

जन भाषा में प्रचलित कहावतों, मुहावरों का प्रयोग व लोकगीत तथा लोकधुनों के आधार पर काव्य रचना करने का प्रयत्न इन कवियों ने किया है ।

प्रतीक विधान की दृष्टि से यदि नई कविता की ओर देखें तो हम पाएंगे कि इसमें नवीन व प्राचीन दोनों प्रतीक लिए गए हैं। परंपरागत प्रतीकों का नए परिवेश में नए अर्थ के साथ प्रयोग कविता में किया गया है। जैसे– भेंड़, भेड़िया, अजगर, सांप इत्यादि जैसे शब्द सत्ताधारी वर्ग व्यवस्था आदि के लिए नए प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, साथ ही पृथ्वी, पहाड़, सूरज, चांद, सायं व कमल आदि जैसे शब्द परंपरा गत अर्थ से हटकर नए अर्थ नए प्रतीक बनकर हुए हैं। जैसे :–

"सांप तुम सभ्य तो हुए नहीं
ना होंगे
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया –"A [9]
(अज्ञेय)

"मैं चली जा रही हूं ऐसे
जैसे लहरों पर विवश लाश बहती जाए–"। [10]
('ठंडा लोहा', धर्मवीर भारती)

कवि ने नए प्रतिमानों को भी गढ़ा है। जैसे :–'कैमरे के लेंस से बुझी आंखें' (भारत भूषण अग्रवाल), 'सिली हुई दियासलाई की तरह असहाय लोग' (नरेश मेहता), 'निंबू का नमकी रूप शरबत शाम' (शमशेर बहादुर सिंह), ऐसे अनेक उदाहरण नई कविता में भ्रष्टव्य हैं।
नई कविता ने लीक तोड़कर समाज के प्रचलित अंगों को अपने साथ समेटा है। नए प्रतिमानों के साथ नयापन देने का प्रयास किया है।

"झाड़ी के एक किलो फूल ने
नीली पंखुड़ियों के एक खिले फूल ने
आज मुझे काट लिया
ओठ से, और मैं अचेत रहा ।" [11]

('फूल नहीं रंग बोलते हैं', केदारनाथ अग्रवाल) इस तरह नई कविता ने परंपरा के प्रतीकों की सीमाबंदी तोड़कर नया कुछ करने की कोशिश की है।
बिब्बात्मकता नई कविता की मूल ध्वनि, मूल छवि है। इनके बिम्ब जीवन से चुने गए हैं, साथ ही व्यक्तिगत व सामाजिक स्तरों को छूते हुए पौराणिक व ऐतिहासिक बिंबों को नए संदर्भ व नए अर्थ में लोकसंपृक्ति के साथ व्यक्त किया है। चिंतन व सौंदर्य प्रतीतियों से संपृक्त इनके बिम्ब जीवन के नए सन्दर्भों में उभरनेवाले हैं।

जैसे :–
"बंधी लीक पर रेलें लादे माल
चिहुंकती और रंभाती अफ़सरायें
डागर सी ।" [12] (अज्ञेय)
या
"शाखों पर जमे धूप के फ़ाहे
गिरते पत्तों से पल ऊब गए
हकँा दी खुलेपन ने फिर मुझको
लहरों के डाक कहीं डूब गए।" [13]
(केदारनाथ सिंह)

नई कविता के शिल्प में नवीनता नवचेतना का काम नए कवियों द्वारा नए उपमानों के प्रयोग ने किया है। इन कवियों ने अपने आस–पास फैले वातावरण और वस्तुओं को उपमान के रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे
"प्यार इश्क खाते हैं ठोकर, आटे के खाली कनस्तर से।" इसी तरह आम आदमी की हालत को नए उपमानों के साथ बयां करता हुआ कवि कहता है :–

"उंगलियों में एहसास दवा है
सिगरेट की तरह
तथा सन्नाटा
लटकी हुई कमरे की कमीज
और हैंगर–सा
झूल रहा है ।" [14]
राजनैतिक स्थिति पर व्यंग करते हुए कवि लिखता है:–
"पहले लोग सठिया जाते थे
अब कुर्सिया जाते हैं
दोस्त मेरे !
भारत एक कृषि–प्रधान नहीं
कुर्सी–प्रधान देश है ।" [15]
(डॉ. मदनलाल डागा)

कई कविताओं के शीर्षक ही उपमान बनकर आम आदमी की व्यथा का इतिहास बताते हैं। जैसे: "मोचीराम" (धुमिल) विषमताओं के कारण आम आदमी की हताशा परेशानी व निराशा को नई कविता नवीन विशेषणों के साथ उभारा है । जैसे –

"नारंगी से चांद को,
रसभरी से तारों को,
केसरों में बसी हुई किरणों को,
पंजों में पकड़कर
कसकर निचोड़ू
सारा रस खींच लूँ।" [16]
(चांद की चाह, विजयदेव नारायण साही)
अथवा
"काठ के पैर,
ठूँठ–सा तन,
गाँठ–सा कठिन गोल चेहरा,
लंबी उदास
लकड़ी–डाल से हाथ क्षीण,
वह हाथ फैला लंबायमान
दूरस्थ हथेली पर अजीब
घोंसला पेड़ में
एक मानवीय रूप
मानवीय रूप में एक ठूँठ ।" [17]
(चौड़े ऊंचे टीले पर, मुक्तिबोध)

इसी तरह :–
"मेरा देश जहां बचपन भीख मांगते
जवान होता है और जवानी
गुलामी करते करते बुढ़िया जाती है
जहां अन्याय को ही नहीं
न्याय को भी
अपनी स्थापना के लिए
सिफारिशों की जरूरत होती है
और झूठ ही नहीं
सच भी रोटरी मशीनों और लाउडस्पीकरो का
मोहताज है ।" [18]
इस प्रकार नई कविता अपने नए शिल्प में नवीन ठाट–बाट के साथ प्रस्तुत हुई है।

संदर्भ सूची

1. नयी कविता के प्रतिमान – डॉ. लक्ष्मीकांत वर्मा
2. http:@@www- social research foundation- com
3. https:@@hi-m-wikipedia-org